स्वतंत्रता प्राप्ति (सन् 1947) को आधुनिक काल को विभाजक रेखा माना जा सकता है। स्वतंत्रता ~~प्राप्ति~~ पूर्व एवं स्वतंत्रता के बाद ~~की स्थिति भिन्न-भिन्न कहा जा सकता है~~ के इन परिस्थि- भिन्न है, इस प्रकार हम स्वतंत्रता पूर्व आधुनिक काल को दो भाग कर सकते हैं तथा बौद्धिकता ~~प्रथम~~ प्रधान स्वतंत्र्योत्तर काल को हम - आधुनिक काल कहते हैं। पूर्व आधुनिक काल को भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद का युग या शुक्ल युग, प्रगतिवाद का युग, प्रयोगवाद का युग तथा नयी कविता का युग में विभक्त किया जा सकता है।

सबसे अधिक विवादास्पद है - आदि काल। आ० शुक्ल ने इसको वीर गाथा काल कहा है क्योंकि संवत् 1050 से संवत् 1375 की कालावधि में कुछ फुटकर रचनाओं को छोड़ कर हमको प्रायः वीर रस युक्त वीर गाथाएँ ही मिलती हैं। ये वीर गाथाएँ दो रूपों में मिलती हैं - प्रबन्ध काव्य के साहित्यिक रूप में और वीर गीतों के रूप में।

नवीन शोधों के ~~आधार पर~~ अनुसार वीर-गाथा परक वे अधिकांश ग्रंथ अप्रामाणिक सिद्ध किये जा चुके हैं, जिन के आचार्य शुक्ल ने आदि काल को वीर गाथा काल कहा था। इसके अतिरिक्त तत्कालीन जैन और सिद्ध साहित्य इतना विपुल एवं बहुमूल्य है कि अब यह नहीं कहा जा सकता है कि आदि काल की प्रमुख प्रवृत्ति वीरगाथाएँ ही थीं। अतः इसको आदिकाल कहना ही अधिक उपयुक्त है।

भाषा की दृष्टि से यह संक्रान्ति काल था, हिन्दी अपभ्रंश के प्रभाव से मुक्त होकर और अपभ्रंश को साहित्यभाषा से अपदस्थ करके साहित्य के रूप में प्रतिष्ठित होती जा रही थी। साहित्य-रचना की दृष्टि से यह हिन्दी साहित्य के आविर्भाव का काल था। अतः इस युग को हिन्दी साहित्य का 'प्रारंभिक काल' नाम देना अधिक उपयुक्त समझते हैं। आचार्य शुक्ल ने पं. मिश्र-बन्धु द्वारा प्रारंभिक काल कहे जाते हुए और इसका आरंभ आठवीं शताब्दी से माना था।

डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस तथा कथित आदि काल का गंभीर अध्ययन किया है। उन्होंने सातवीं शताब्दी के उपलब्ध जैन एवं अपभ्रंश की रचनाओं का विवेचन करते हुए यह महत्त्वपूर्ण कथन किये हैं — "ये रचनाएँ आदि कालीन हिन्दी साहित्य के काव्य रूपों के अनुमान में सहायक हैं। अपभ्रंश के जिन चरित काव्यों की चर्चा पहले की गई है वे अधिकांशतः जैन परम्परा से प्राप्त हुए हैं और हिन्दी भाषियों से बाहर लिखे गये हैं। चन्दवरदाई हिन्दी परम्परा के के आदि कवि की अपेक्षा अपभ्रंश परम्परा के अंतिम कवि हैं। यह बात उनकी रचनाओं से प्रमाणित होती है।" इस प्रकार डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी आचार्य शुक्ल की भाँति चन्दवरदाई को हिन्दी का प्रथम महत्त्वपूर्ण कवि नहीं मानते हैं।

एक अन्य तथ्य भी उल्लेखनीय है वीरगाथात्मक ग्रंथों में सर्व प्रथम ग्रंथ 'खुमान रासो' है इसका रचना काल संवत् ११७० से लेकर संवत् ११७५ तक माना जाता है। इस स्थिति में वीरगाथा काल (प्रारंभिक काल) का आरंभ संवत् ११७० में माना जाना चाहिए। इसी प्रकार विद्यापति को आदि काल के अंतिम कवि माना जाता है और प्रारंभिक काल की सीमा उनके रचनाकाल संवत् १४४० या १४६० तक मानी जानी चाहिए।

हम सामान्यतः हिन्दी के नाम पर हिन्दी के उस स्वरूप को ग्रहण करते हैं जिसकी प्रवृत्ति संस्कृत की ओर है तब प्रश्न उत्पन्न होता है कि अपभ्रंश और अवहट्ट रचनाएँ को हिन्दी कहना क्या समीचीन होगा? यदि हिन्दी का वर्तमान रूप उसके प्राचीन रूप का विकास है तो अपभ्रंश एवं अवहट्ट काल के ग्रंथ हिन्दी काल की सामग्री के रूप में स्वीकार किये जाने चाहिए। अपभ्रंश काल के विवेचन करते हुए आचार्य शुक्ल ने सिद्धों के साहित्य का उल्लेख किया है और लिखा है कि वे संस्कृत रचनाओं के अतिरिक्त अपनी बानी अपभ्रंश ~~से, सिद्धों के उलटे - बाले सिद्ध (संधिभाषा)~~ से मिश्रित भाषा या काव्य भाषा में भी बराबर करते रहे, सिद्धों के [illegible] - उलटे वाले (संधा भाषा) हैं,

जिसका समय डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त ने विक्रम संवत् ७०० निर्धारित किया है। इसका तात्पर्य यह है कि अपभ्रंश के रचनाकारों को लेकर यदि हिन्दी साहित्य की लिखी हुई रचना-राशि संजोई जाय तो हिन्दी साहित्य के निर्माण काल सिलसिलेवार विक्रम संवत् ७०० से आरंभ ठहराया जा सकता है।

यदि उक्त कालावधि की सामग्री के आधार पर हिन्दी साहित्य के इतिहास को इस संवत् ७०० वि० में स्थापित किया जा सके तो संवत् ७०० से प्रारंभिक काल तक की विशाल कालावधि को हमारा आदिकाल कहा जाना चाहिए।

उपसंहार :— उपलब्ध सामग्री एवं अद्यतन शोधकार्यों के आधार पर हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन निम्नलिखित प्रकार किया जा सकता है —

(१) आदि काल संवत् ७०० से संवत् ११९० तक
(२) प्रारंभिक काल — संवत् ११९० से १४५० तक
(३) पूर्व मध्य काल — भक्तिकाल — संवत् १४५० से १६५० तक
(४) उत्तर मध्य काल — रीतिकाल संवत् १६५० से १९०० तक
५. गद्य काल — संवत् १९०० से २००० तक
६. आधुनिक काल — संवत् २००० से अद्यावधि

कालगत प्रवृत्तियों के आधार पर गद्य काल एवं आधुनिक काल की कालावधि (संवत् १९०० से अद्यावधि) का यह उपविभाजन इस प्रकार उपयुक्त रहेगा। —

भारतेन्दु युग — संवत् १९०० से १९६२ तक
द्विवेदी युग — संवत् १९६२ से १९७५ तक
छायावाद का युग अथवा प्रसाद, प्रेमचन्द युग अथवा शुक्ल युग — संवत् १९७५ से संवत् १९९५ तक
प्रगति एवं प्रयोग का युग — संवत् १९९५ से संवत् २०१० तक
नयी कविता का युग — संवत् २०१० से अब तक

भक्ति काल को परम्परागत रूप में निर्गुण भक्ति काल और सगुण भक्ति काल में विभक्त करने में कोई बाधा नहीं होनी चाहिए।

(समाप्त)